International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 163-164

नीतिशतकम् की उपयोगिता और आतंकवाद

डॉ0 अशोक कुमार दुबे

एसोशिएट प्रोफेसर संस्कृत–विभाग, बी0 एस0 एन0 वी0 पी0 जी0 कॉलेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

जिस देश की माटी में मर्यादा पुरूषोत्तम के चरणों के चिह्न अंकित हो, जिस देश के वायुमण्डल में भगवान में श्री कृष्ण के गीता के अक्षर अक्षय हो, जहाँ से उच्चरित हुआ वसुधैंव कुटुम्बकम् का संदेश पूरे विश्व को एकता के सूत्र में पिरोने का संदेश बन गया हो। उस देश के लिए आतंकवाद की समस्या देश का दुर्भाग्य है। यह समस्या देश और समाज की जड़ों में गहराती हुई खोखला कर रही है, राष्ट्रव्यापी इस समस्या ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया पृथ्वी का स्वर्ग कहे जाने वाली हरी भरी कश्मीर की वसुन्धरा हो या श्रम, उत्साह जोश में भरी पंजाब को उर्वरा भूमि सर्वत्र आतंक के भयानक दानव ने अपने पाँव पसारे और दावाग्नि सदृश वहाँ की सुख शान्ति निगलता चला गया। मुम्बई के बम विस्फोट कांड हो या ताज कांड ये सब आतंकियों के कार्यवाही के परिणाम रहे भारतवर्ष के भविष्य में लिखे जाने वाले इतिहास में इसे मानवता के कलंक के रुप में देखा जायेगा हर बार मानवता शर्मसाार होती है सदैव पुण्य भूमि रक्त से अपवित्र होती है आज आतंकवाद विश्व की समस्या बन गया है दूसरों को आतंकित करना ही आतंकवाद है यह आतंक पूरे विश्व में है छोटे देश बड़े देश से आतंकित है इस समस्या का प्रारम्भ हमारे घर परिवार समाज से होता है उचित परिवेश पालन पोषण व संस्कार के अभाव में एक ऐसी पीढ़ी पनप रही है जो विद्रोह आक्रोश से भरपूर है धर्म के संरक्षण के नाम पर साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दे रही है घर परिवार समाज राष्ट्र स्तर पर आतंक का स्वरुप भले ही भिन्न हो स्थान चाहे हिन्दुस्तान हो या पाकिस्तान आतंकवादी बनने की प्रक्रिया भी भिन्न भिन्न हो सकती है पर आतंकवाद का एकमात्र कारण है कि समाज परिवार में आ रही दिन प्रतिदिन संस्कारों, मूल्यों में गिरावट है। परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है यहाँ पर बच्चों में प्रेम, दया, सहिष्णुता, विनम्रता, प्राणिमात्र के प्रति करुणा के मूल्य डाल दिये जाते है, इन गुणों के साथ बड़ा हुआ बालक समाज में विध्वंसात्मक कार्यवाही कभी नहीं करेगा।

कहने का तात्पर्य है कि आतंक की समस्या सांस्कृतिक मानवीय मूल्यों के क्षरण के कारण परिवार समाज और विश्व मे बढ़ रही है यह आतंक की परम्परा नयी नही है रावण जरासघ शिशुपाल भी आतंकी थे देश का सांस्कृतिक इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि सत् असत् की सज्जन दुर्जन की समानान्तर धारा समाज में चलती रही हैं राम रहे हैं तो रावण भी रहे हैं। कृष्ण रहे हैं तो शिशुपाल भी रहे हैं हर युग में अच्छे खराब दोनो तरह के लोग रहे हैं सदैव बुराई पर अच्छाई की ही विजय हुई है पुरातन युग में समृद्ध संस्कृति के बल पर अच्छाई की विजय हुई उसी शाश्वत सांस्कृतिक परम्परा का आज पुनः आह्वान करने की आवश्यकता है वह गरिमामयी संस्कृति वेदों हमारे पुराणों काव्य नाटको में संरक्षित है हमारी ही संस्कृति से निकला विश्व बन्धुत्व का उद्घोष है हम व्यक्ति समाज की नही विश्व की एकता की बात करते हैं।

हमारे वेदों में कहा गया है–

"सह नाववतु सहनौ भुनय.क्तु"

मारे यहाँ संस्कृत वाड्मय में अनेकानेक नाटक उपाख्यान महाकाव्य इत्यादि में इस प्रकार के संदेश दिये गये है जो आज की भटकती युवा पीढ़ी को संतुलित तरीके से जीवन जीने की कला सिखलाती है।

सत्यमेव व्रतं यस्य दया दिनेशु सर्वथा।
कामक्रोधो वशे यस्य तेन लोकत्रयं जितम्।।

जिस व्यक्ति का सत्य बोलना एवं सत्य का आचरण करना ही व्रत है जो हर प्रकार से दीनों पर दया करता है जिसके काम (इच्छा) और क्रोध वश में है उस व्यक्ति ने तीनो लोको को ही जीत लिया है।

इसी प्रकार अन्यत्र कहा है–

"सन्तोष परं नास्ति
सुख स्थानं च शाश्वतम्।"

अर्थात सन्तोष से बड़ा स्थायी सुख और कुछ नही है।

इसी प्रकार क्रोध की अधिकताकिकं आक्रोश की अधिकता अनुशासनहीनता की पराकाष्ठा का परिणाम है–आतंकवाद। अति करने वाले का क्या हश्र हुआ है–

"अतिदानाद् बलिर्बद्धो
अतिमानात् दुर्योधनः।
विनष्टो रावण लौल्याद्,
अति सर्वत्र वर्जयेत्।।"

अधिक दान देने से राज बलि बन्धनग्रस्त हुआ अधिक घमण्ड से दुर्योधन मारा गया अत्यधिक लोलुपता के कारण रावण का नाश हुआ इसलिए कहीं भी और कभीं भी अतिरेक नहीं करना चाहिए।

मानवता का धर्म एक वाक्य में अष्टादश पुराणों में निहित है जिसका अनुसरण करने मात्र से लोगों के जीवन की दिशा बदल सकती है सकारात्मक सोच विकसित हो जायेगी।

"अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनम् द्वयम्।
परोपकाराः पुण्याय पापाय परपीडनम्"।

सुख दुःख के प्रति समभाव आने से परिस्थितियों से लड़ने की शक्ति मिलती है–

"सम्पत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम्।
आपत्सु च महाशैलशिलासंघात कर्कशम्।।

भर्तृहरि कहते है कि महापुरुषों का चित्त सम्पत्ति के समय कमल की भॉति कोमल होता है वही विपत्ति के समय बड़े पर्वत चट्टान के समूह की भांति कड़ा हो जाता है।
अपने धर्म अपने क्षेत्र अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को आतंकित करने वाले को एक व्यापक दृष्टिकोण यह श्लोक प्रदान करता है–

"अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैवकुटुम्बकम।।"

अपने पराये का अन्तर संकुचित विचार वाले लोग ही करते है विशाल ह्रदय वाले तो सम्पूर्ण पृथ्वी को ही अपना परिवाार मानते हैं।
समाज व देश में सदाचरण का अभाव सदाशयता की कमी आतंकवाद के कारणों में से एक है नीतिशत्कम में सदाचार की आवश्यकता बताते हुए अन्य मानवीय मूल्यों पर भी प्रकाश ड़ालते है।

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्यसंयमों।
ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः।
अक्रोधस्तापसः क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य नित्यजिता।
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम ।।।

सज्जनता सम्पत्ती का मितभाषिता शूरता का, चित्त की शान्ति ज्ञान का, नम्रता विद्या का, सुपात्र में व्यवधान का, क्रोध न होना तपस्या का, क्षमा समर्थ का निश्छलता धर्म का भूषण है। नृशंस बन चुके आंतकी ह्रदयों के लिए यह श्लोक प्रेरणास्पद है।

तृष्णा छिन्धि भज क्षमा जहि मदं पाने रति कृथाः
सत्य बूहानुयाहि साधुपदवी सर्वस्यविद्वज्जनम्
मान्यान्मनव विद्विशोप्युननय प्रख्यापय प्रश्रयं
कीर्तिपालय दुःखिते कुरू दयामेतत् सतां चेष्टितम्।

लाभ छोडो क्षमा धारण करो। गर्व का त्याग करो पाप में प्रेम न रखो सत्य बोलो सज्जनो, का मार्ग अनुशरण करो। विद्वानों की शरण लो पूज्य लोगों का आदर करो शत्रुओ को मनाओ नम्रता दिखलाओ यश की रक्षा करों तथा दुःखी जनों पर दया करों। दुर्जन बिना कारण लोगो का अपकार करते हैं। आतंकवादियां को दुर्जनता छोड़ सज्जन बनना चाहिये जो की अकारण लोगों पर दया करता है। प्रेम अहिंन्सा को अपनाकर ही मनुष्य संमार्ग पर चल सकता है।
इस प्रकार आतंकवाद की समस्या के उन्मूलन हेतु देववाणी संस्कृत वाङ्मय में निहित जो शाश्वत मानवीय मूल्य एवं परम्पराये हैं जिन्हें अपनाकर किसी परिवार, समाज का निर्माण होगा तो ऐसा वर्ग ही जन्म नहीं लेगा। जो आक्रोश से आतंकित और भयभीत करे।
सबके लिए प्रेम सद्भाव विश्व बन्धुत्व की भावना से युक्त भारतीय संस्कृति सस्कृत वाङ्मय में निहित मे ही निहित है।
वेदों के काल से आज तक यह वाङमय लोक चेतना की जागृत कर लोक कल्याण की भावना का प्रसार करता है। जिसके पश्चात् लोगों के लिए आतंक का कही स्थान शेष नहीं रहता आज ये मूल्य हमारे भीतर कहीं न कहीं अवश्य विद्यमान हैं। पूरे देश को हिलाने वाला ताज होटल कांड के तुरन्त बाद भी देश निर्भीक हो उठां। हम पूरी हिम्मत से इस पल का सामना करते है।
इस प्रकार भर्तृंहरि रचित नीतिशतकम् में अनेक ऐसे उदाहरण प्राप्त होते है जिनको आचरण में उतार कर, संतुलित ढंग से जिया जा सकता है। जिससे राष्ट्र की उन्नति हो सकती है।